सेब की आधुनिक खेती कैसे करें .. संक्षिप्त में

मै0 इंडोडच होर्टीकल्चर टैक्नोलौजी द्वारा विगत चार वर्षों से हॉलैंड में सेब की खेती में प्रयोग किये जा रहे हैं। कम्पनी द्वारा वॉयरस फ्री रुटस्टॉक बड़ी मात्रा में मंगाये गये हैं तथा विभिन्न प्रजातियों को भी आयात किया गया है। सेब उत्पादन की तकनीक के कुछ

महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार है–

1–भूमि एवं जलवायु का चुनाव

समान्यतः बर्फ पड़ने वाले स्थानों पर सेब की खेती की जाती है जो कि समुद्रतल से 1600मीटर से 2500मीटर तक उपयुक्त पाया गया है परंन्तु प्रजातियों का चुनाव तथा रुटस्टॉक का चुनाव विभिन्न उँचाइयों के हिसाब से, तापमान के हिसाब से पानी की उपल्ब्धता के हिसाब से कम्पनी के सेब विशेषज्ञों द्वारा संतुती के आधार पर ही करना चाहिए।

2–प्रजातियॉ

इंडोडच कम्पनी द्वारा वायरस फ्री रूटस्टॉक MM-111, M-106, MM-9 इत्यादी रूट स्टॉक पर विभिन्न प्रजातियॉ जैसे– Gala, Fuji, Red S Delicious, Golden Delicious, Breburn, Delcorf उपल्ब्ध करायी जा रही हैं साथ ही पॉलिनाइजरस के रूपों में प्रोफेसर स्पेनसर उपलब्ध कराये जा रहें हैं जिससे परागण बहुत तेजी से होता है।

3–खेत की तैयारी

जहॉ सेब लगाना हो उन खेतों में छः माह पूर्व ही तैयारी कर देनी चाहिए खेत को समतल बनाकर 7 से 8 इंच तक गहरी खुदाई करके सभी खरपतवार जड़ इत्यादि निकाल देनी चाहिए। हाइडेन्सीटी तरीके के अनुसार पौधे से पौधे की दूरी मात्र एक मीटर रखी जाती है। अतः एक–एक मीटर दूरी पर डेढ़ फुट गहरे गडढे बना लेने चाहिए तथा खाद का मिश्रण इंडोडच कम्पनी द्वारा भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार कम्पनी के सेब विशेषज्ञों की संतुती के आधार पर डालना चाहिए। पर्वतीय क्षेत्रों में यदि खेतों की चौड़ाई 8 फुट से कम है तो खेतों के मध्य में एक ही पंक्ति लगायें, इससे बड़े खेतों की दशा में लाइन से लाइन की दूरी दो मीटर रखते हुए एक पंक्ति और लगाई जा सकती है।

4– ड्रिप इरीगेशन

सेब के पौधे खेत में लगाने से पहले ही खड्डो के उपर से पंक्ति के आधार पर ड्रिप इरीगेशन पहले ही लगा दिया जाना चाहिए। प्रत्येक पौधें को बसंत ऋतु में 3 से 4 लीटर तथा ग्रीष्म ऋतु में 5 से 8 लीटर प्रतिदिन पानी की आवश्यकता होती है किसान भाई पानी की उपलब्धता अवश्य सुनिश्चित करें तथा उतना ही बाग लगाये जितना आप मानक के अनुसार पानी दे सकते हैं।

5–वृक्षारोपण

प्रत्येक गड्डे में पौधे को सहारा देने के लिए तीन मीटर लम्बे मजबूत बांस को आधा मीटर गहराई तक गाढ़ दें तथा पौधे को गड्डे में बांस के सहारे लगाये तथा पौधे के उपरी भाग को ढीली रस्सी से बांस के सहारे बांध दें, इसके पश्चात शीघ्र ही ड्रिप इरीगेशन चालू कर दें ध्यान रहें कि लगाने से पहले पौधे को छाया में पानी में लगभग 24 घंटे तक डुबाकर रखें, उसके पश्चात ही शाम के समय खेत में लगायें।

6–मलचिंग

किसान भाई सूखे हुए फूस इत्यादी की मलचिंग पेड़ के चारों ओर डेढ़ फुट के व्यास तक करे ताकि गड्ढे में नमी बनी रहें।

7–पौधों की पुरूनिंग तथा ट्रेनिंग

कम्पनी द्वारा आपको 2 मीटर लम्बे तथा चार से छः टहनियों वाले पौधे उपलब्ध कराये जा रहे हैं। जिसमें प्रथम वर्ष किसी भी प्रकार की पुरूनिंग की आवश्यकता नहीं होती है। द्वीतिय वर्ष में बांस से बांस के बीच में छः–छः तारें (विशेष प्लास्टिक की) टेलिफोन तारों की तरह कसके बांध देनी चाहिए जब पौधे की टहनियॉ बढ़नी लगें तो इन्हें इन तारों के सहारे से ढीली रस्सी से बांध देना चाहिए लगभग छः टहनियॉ एक तरफ तथा छः टहनियां दूसरी तरफ रखनी चाहिए (यह प्रक्रिया कम्पनी के सेब विशेषज्ञों की देख में करनी चाहिए) यह क्रिया तथा इससे आगे की क्रियायें कम्पनी के विशेषज्ञों की देखरेख में की जानी चाहिए।

8–उपज

सामान्य परिस्थितियों में विकसित पौधे द्वीतिय वर्ष मे 2 किलो तथा 5 वर्ष तक 25 किलों प्रति पौधा फल देते हैं। इस प्रकार 20 नाली अर्थात एक ऐकड़ में 800 पौधे लगाने के आधार पर 15,000 से 20,000 किलो सेब प्रति एकड़ अथवा 20 नाली में पैदा किया जा सकेगा।

Contact :

Indo-Dutch Horticulture Technologies (p) Ltd.
P.O Chaffi, Bhimtal, Distt-Nainital,
Uttarakhand, India - 263132

M: +91-8958984919
O: +91-9760608489
F : +91-11-66173624

info@indodutch.com
www.indodutch.com